E-ISSN-2584-2870 https://doi.org/10.65833/dbs.2026.345

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
श्रीरघुनाथकीर्तिपरिसरः, देवप्रयागः
देवभूमि-सौरभम्
E-ISSN 2584-2870
Devabhūmisaurabham

Vol 3 Issue 1 Jan-June 2026 Devabhūmisaurabham International Journal of CSU Shri Raghunath Kirti Campus Devprayag Uttarakhand India

भारतीय ज्ञान समाज में अर्धनारीश्वर की संकल्पना

गणेश महतो (शोधछात्र)
संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली;

शोधसार - प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीयज्ञानपरम्परा में सन्निहित स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध में अर्धनारीश्वर की संकल्पना से अभी प्रेरित है। सम्पूर्ण जगत प्रकृति और पुरुष के संयोग से ही उत्पन्न हुआ है - **प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्।** स्त्री और पुरुष एक ही शरीर के दो हिस्से है, जिसकी उपमा वेदों में "**अर्द्धबृगल**" संज्ञा दी है। पारिवारिक संरचना का आधारस्तंभ पति-पत्नी का पारस्परिक संबंध ही सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का मूल आधार है। भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी को समान अधिकार प्राप्त है। वैदिक यज्ञों में स्त्री के बिना पुरुष को अपूर्ण कहा है- **अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।** पुरुष तब तक पूर्णताको धारण नहीं करता, जबतक कि नारी आकर उसके आधे अंग को नहीं भर देती है, अतः स्त्री को पुरुष की अर्धांगिनी व श्री (लक्ष्मी) कहा गया है। उन्हें गृह की प्रतिष्ठा के रूप में मान्यता दी गई है। **न गृहं गृहमित्याहुः गृहिणी गृहमुच्यते।** अर्थात् उस घर को घर नहीं कहा जा सकता जिस घर में गृहिणी ना हो। भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के प्रतियोगी नहीं अपितु एक-दूसरे के पूरक हैं। अर्धनारीश्वर के रूप में दम्पती अधिकार व कर्तव्य की चर्चा इस शोध-पत्र में की गई है।

कूट शब्द - अर्धनारीश्वर, प्रकृति, पुरुष, शिव, शक्ति, आत्मा, गृहणी, पत्नी, भार्या, यज्ञ,

विषय प्रवेश - भारतीय संस्कृति में भगवान शिव का यह अर्धनारीश्वर अवतार स्त्री-पुरुष के मध्य समानता का प्रतीक है, भारतवर्ष में स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूरक के रूपमें देखे जाते है। यथा -नदी के तटों की भाँति वे दोनों संयुक्त हैं, पारिवारिक जीवन की धारा दोनों के मध्य प्रवाहित होती है। स्त्री-पुरुष दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध ही सृष्टिके सृजनका हेतुहै, जिस प्रकार शुक्ति के दो दलों के बीच में मोती स्थिति होती है, वैसे ही स्त्री और पुरुष इन दोनों के मध्य संतति

होती है। अर्थात् ब्रह्मा द्वारा निर्मित इस विश्वसृजन की प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने में स्त्री-पुरुष समान रूप से भागीदार हैं। श्वेताश्वेतरोपनिषद् में स्त्री-पुरुष (आत्मा) के अभेद स्वरूप बताते हुए कहा है -

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी।[1]

शिव शक्ति का अद्वैत स्वरूप - स्त्री और पुरुष तत्त्वतः एक ही हैं। विराट् पुरुष की काया का भाग जिस प्रकार मनुष्य है, उसी प्रकार समस्त प्रकृति उसका ही भाग है।[2] त्रिगुणात्मिका प्रकृति एवं माया शक्ति की अभिन्नता का निरूपण करते हुए कहा गया है कि प्रकृति ही माया है और महेश्वर उसके अधिष्ठाता। उसी प्रकृति-पुरुष से यह सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है।

मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्।

तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत्॥[3]

सम्पूर्ण जगतप्रकृति और पुरुष के संयोग से ही उत्पन्न है - **प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्।**[4] पुरुष के संसर्ग से प्रकृति ही समस्त प्राणिजगत को, समस्त विकारों को और अखिल गुणों को उत्पन्न करती है –

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्धयनादी उभावपि।

विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान्॥[5]

पुरुष और प्रकृति का अन्योन्याश्रय और अविभाज्य सम्बन्ध है,शक्ति और शक्तिमान को अभेद माना गया है अर्थात् शिव शक्ति से पृथक् नहीं है। अद्वैतवेदांत के संस्थापक आचार्य शंकर कहते है –

अव्यक्तनाम्नी परमेशशक्तिरनाद्यविद्या त्रिगुणात्मिका परा।

कार्यानुमेया सुधियैव माया यया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते॥[6]

---

[1]**त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी।**
त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्वतोमुखः। श्वेताश्वेतरोपनिषद-४/३

[2]**पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वास्तथा भूतविशेषसंघान्।**
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥ गीता, ११/१५

[3]**श्वेताश्वेतरोपनिषद-४/१०**

[4]**श्रीदेव्यर्थवशीर्षमन्त्र -२**

[5]**गीता-१३/१९**

[6]**विवेकचुडामणि-१०८**

अनादि, अविद्या, त्रिगुणात्मिका परारूपवाली अव्यक्तनामवाली परमेश्वर की शक्ति माया है, जिससे यह समस्त जगत् उत्पन्न होता है। विद्वान् पुरुष उसे कार्यों के आधार पर जानते हैं। शिवमहापुराण में कहा गया हैं कि - **शंकरः पुरुषाः सर्वे स्त्रियः सर्वा महेश्वरी ।** विश्व के समस्त पुरुष भगवान सदाशिव के अंश और समस्त स्त्रियां भगवती शिवा (शक्ति) की अंशभूता हैं, उन्हीं भगवान अर्धनारीश्वर से यह सम्पूर्ण चराचर जगत् व्याप्त है । आद्यशंकराचार्य अर्धनारीश्वर की स्तुति करते हुये-

त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा शरीरार्धं शम्भोरपरमपि शङ्के हृतमभूत् ।

यदेतत्त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमकुटम् ॥[7]

इस जगत में पुरुष बिना शक्ति के कोई भी कार्य करने में समर्थ नही हो सकता है,इस बात की पुष्टि आद्यशंकराचार्य विरचित सौंदर्यलहरी की यह आरंभिक पंक्तियाँ करती हैं -

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्।

न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।[8]

"शक्ति के बिना शिव, शव है" उमामहेश्वरस्तोत्र में आद्यशंकराचार्य जी ने शिव और शिवा दोनों ही अखिल जगत्प्रपंच-सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहारस्वरूप का कारण स्वीकार करते हुऐ उस शंकर और पार्वती को बारम्बार प्रणाम करते है -

नमः शिवाभ्यां परमौषधाभ्यां पञ्चाक्षरीपञ्जररञ्जिताभ्याम्

प्रपञ्चसृष्टिस्थितिसंहृतिभ्यां नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥[9]

इस सम्बन्ध को अर्धनारीश्वर के रूप में दर्शाया गया है । शिव और शक्ति के इस सम्बन्ध को महाकवि कालिदास ने बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है -

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।[10]

---

[7]**सौंदर्यलहरी; श्लोक-२४**

[8]**सौंदर्यलहरी; श्लोक-०१**

[9]**उमामहेश्वरस्तोत्र – श्लोक-५**

[10]**रघुवंशमहाकाव्यम् -१/१**

यह स्त्री और पुरुष के अद्वैत सम्बन्ध में अर्धनारीश्वर की संकल्पना वेदों से ही प्राप्त होती है। जहाँ सृष्टि के पूर्व से ही एक ही तत्त्व विद्यमान था -

आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्मात् ह अन्यत् न परः किं चनास ॥[11]

अर्थात् वह ब्रह्म तत्त्व ही प्राण से युक्त, अपनी क्रिया से शून्य और माया शक्ति के साथ अविभक्त रूप में विद्यमान था। बृहदारण्यकोपनिषद् में मैथुनीसृष्टि की उत्पत्ति क्रम में महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं –

स वैनैव रेमे तस्मादेकाकी न रमते स द्वितीयमैच्छत् । स हैतावानास यथा स्त्रीपुमा सौसम्परिष्वक्तौ स इममेवात्मानं द्वेधापातयत्ततः पतिश्चपत्नी चाभवतांतस्मादिदमर्धबृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यस्तस्मादयमाकाशः स्त्रियापूर्यत एव ताः समभवत्ततो मनुष्या अजायन्त ॥[12] अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में प्रजापति ने अपने शरीर को द्विधा (दो भागों में) विभक्त कर पति अर्थात् पुरुष और पत्नी अर्थात् स्त्री हुए। इसलिए अर्धबृगल की (द्विदल अन्न के एक दल) संज्ञा दी है। वह शरीर के दक्षिण अंग से पुरुष और वाम अंग से स्त्री के रूप में प्रकट हुये -

इन्वोह वै नामैषयोऽयंदक्षिणेऽक्षन्-पुरुषः, अथैतद् वामेऽक्षिणि पुरुषरूपमेषाऽस्य पत्नीविराट्।[13]

अर्थात् शरीर के दक्षिण भाग को पुरुष और वामभाग को पत्नी कहा गया है। इस सिध्दांत का अनुगमन करते हुये अन्य स्मृति, पुराणादि ग्रन्थों में सृष्टिप्रक्रिया को विस्तार से बताया गया है। मनुस्मृति का मत है कि सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा ने स्वयं को ही दो रूपों में विभक्त किया, अर्धभाग से पुरुष और अर्धभाग से नारी हो गये ,और उसी स्त्री से विराट संज्ञक पुरुष की भी सृष्टि हुई है।[14] यही कारण है कि स्त्री को पुरुष की अर्धाङ्गिनी माना गया है –

द्विधाकृत्वाऽऽऽत्मनो देहमर्धेन पुरुषोऽभवत् ।

अर्धेन नारी तस्यां च विराजमसृजत्प्रभुः॥[15]

---

[11]**ऋग्वेद-१०/१२९/५**

[12] **बृहदारण्यकोपनिषद-**

[13]**बृहदारण्यकोपनिषद - ४/२/२**

[14]**स ब्रह्मा निजदेहं द्विखण्डं कृत्वा अर्धेन पुरुषो जातः अर्धन खी, तस्यां मैथुनधर्मेण विराट्संशं पुरुषं निर्मितवान् । श्रुतिब-"ततो विराढजायत" (बाज० स० ३१/५) इति ।कुल्लुकभट्ट-मन्वार्थ मुक्तावली / मनुस्मृति-१/३२)**

[15] **मनुस्मृति-१/३२ स्वेच्छामयः स्वेच्छया च द्विधारूपो बभूव ह। स्त्रीरूपो वामभागांशो दक्षिणांशः पुमान् स्मृतः ॥**

विष्णुपुराण एवं श्रीमद्भागवतमहापुराण के अनुसार भी -

शतरूपां च तां नारीं तपोनिधूतकल्मषाम् ।

स्वायम्भुवो मनुर्देवः पत्नीत्वे जगृहे प्रभुः।।[16]

कस्य रूपमभूद् द्वेधा यत्कायमभिचक्षते ।

ताभ्यां रूपविभागाभ्यां मिथुनं समपद्यत।।[17]

अर्थात् एक ही **क** रूप ब्रह्म के शरीर पतनान्तर दो विभाग हुए, जिससे नर- नारियों के शरीरों का नाम काया पड़ा। वह आदि नर मनु कहलाया और आदि नारी शतरूपा कहलायी । वस्तुतः नर- नारी दोनों एक ही तेज के दो ज्योति हैं, स्त्री के बिना पुरुष या पुरुष के बिना स्त्री अपूर्ण है, अर्थात् वे दोनों एक दूसरे के बिना पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकते । स्त्री(शक्ति) और पुरुष(शिव) एक ही सिक्के के दो पहलू हैं यथा - पुरुष दिन है तो नारी रजनी है । पुरुष प्रभात है तो नारी उषा है । पुरुष तरु है तो नारी लता है । पुरुष आदित्य है तो नारी प्रभा है । पुरुष सत्य है तो नारी श्रद्धा है । पुरुष धर्म है तो नारी धरिता है । पुरुष स्वाभिमान है तो नारी क्षमा है । गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में कहते है –

भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।

याभ्यां बिना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ।।[18]

कि जो मनुष्य श्रध्दा और विश्वास रूपी भवानी और शंकर को बिना जाने, अपने अन्तःकरण के ईश्वर को नही जान सकता है । इसी तथ्य को सर्वग्राह्य बनाने के लिए भगवान् शिव के अर्धनारीश्वर रूप की विधिवत् प्रतिष्ठा की गयी है-

प्रदीपरत्नोज्ज्वलकुण्डलायै, स्फुरन् महापन्नगभूषणाय ।

शिवान्वितायै च शिवान्विताय नमः शिवायै च नमः शिवाय ।।[19]

---

[16] **विष्णुपुराण -१/७/१७**

[17] **श्रीमद्भागवतमहापुराणे- ३/१२/५२**

[18] **रामचरितमानस; श्लोक -२**

[19] **अर्धनारीनटेश्वर स्तोत्र - श्री शङ्कराचार्यकृत ॥ श्लोक -७**

विवाह संस्कार के माध्यम से स्त्री-पुरुष दोनों मन तथा आत्मा से एक पवित्र बंधन में बंधे रहते है । यह सम्बन्ध स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्बन्धके साथ ही आत्मिय सम्बन्ध भी होता है और इस पवित्र सम्बन्धको भारतीय समाज में पति-पत्नी में दर्शाया गया है । शतपथब्राह्मण में पुरुष की पूर्णता के विषय में कहा गया है – पुरुष तब तक अपूर्ण ही रहता है, जब तक वह विवाह करके प्रजा की उत्पत्ति न कर ले।[20] विवाह व संतानोत्पति के पश्चात् ही वह पुरुष यज्ञादि धार्मिक कार्यों में अधिकृत होता है । ब्राह्मणग्रन्थों में आत्मा का आधा अंश पत्नी (अर्धाङ्गिनी) होती है और पत्नी के बिना पुरुष(पति) को यज्ञ का अनाधिकारी कहा गया है-

अर्धो ह वा एष आत्मनो यत्पत्नी।[21]

अयज्ञीयो वैष योऽपत्नीकः।[22]

अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः ।[23]

शतपथब्राह्मण का स्पष्ट निर्देशहै कि पत्नीके अभाव में पुरुष स्वर्ग नहीं जा सकता। इसलिये स्वर्गादि की कामना से किये जाने वाले यज्ञ में पत्नी की उपस्थिति अत्यन्त आवश्यक समझी जाती है - **स रोक्ष्यञ्जायामामन्त्रयते, जाये एहि स्वो रोहावेति । रोहावेत्याह जाया। तस्माज्जायामामन्त्रयते। अर्धो ह वैष आत्मनो यज्जाया।** अर्थात् वह पुरुष स्वर्गलोकपर आरूढ़ होते समय पत्नीको सम्बोधित करता है- 'जाये ! चलो, स्वर्गलोकमें चलें।' पत्नी कहती है- **स्वर्गलोकमें चलें।** इसीलिये 'जाया' को आमन्त्रित करता है, क्योंकि जाया (पत्नी) इस शरीरका अर्ध भाग है। एवं पत्नी को यज्ञ का पृष्ठ भाग भी कहा गया है ।[24] महर्षि वेदव्यास ने व्याससंहिता में नर की पूरयित्री नारी है, जिसे जाया की संज्ञा दी गई है ऐसा विचार प्रस्तुत किया है -

यावन्न विन्दते जायां तावदर्धो भवेत् पुमान् ।[25]

---

[20]**तद्यज्जायामामन्त्रयतेऽर्को ह वाऽएषऽआत्त्मनो यज्जाया तस्माद् पावन्नायां न व्विन्दते नैव तावत्त्प्रजायते ऽसर्वो हि तावद्भवत्त्यथ यदैव जायां व्विन्दते ऽथ प्रजायते तर्हि हि सर्वो भवति सर्व्व ऽएतां गतिं गच्छानीति तस्माज्जायामामन्त्रयते ॥शतपथब्राह्मण- ५/१/६/१०**

[21]**तैत्तिरीयब्राह्मण - ३/३/३/५**

[22]**शतपथब्राह्मण -३/३/३/१**

[23]**तैत्तिरीयब्राह्मण-२/२/२/६**

[24]**शतपथब्राह्मण - ५।२।१।१०; शतपथब्राह्मण- १/३/१/१२**

[25]**व्यास-संहिता २/१४**

पत्नी शब्द के विषय में **महर्षिपाणिनि** ने भी कहा है - **पत्युर्नोयज्ञसंयोगे ।**[26] वही पत्नी कहलाती है जो पति के साथ यज्ञ आदि कर्मो में भाग ले सके। शतपथब्राह्मण के अनुसार - **पतिं वाऽनु जाया तदेवाऽस्यापि पत्नी ।**[27] यजमान की जाया पत्नी इसलिए कहलाती है कि वह पति के साथ यज्ञ कार्यों में भाग लेती है। ब्राह्मणग्रन्थों में विवेचित कर्म-काण्डीय विवरणों में स्पष्ट कहा गया है कि विवाह का प्रथम उद्देश्य याज्ञिक कृत्यों के संपादन की पूर्णता है जो पत्नी के रहने पर ही संभव है। बिना ग्रन्थिबन्धन के कोई भी धार्मिक यज्ञ यागादि कर्म एवं मङ्गल कृत्य सम्पन्न नहीं होते हैं पत्नी अपने पति के साथ मिलकर वह समस्त याज्ञिक और धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करती है।

वैदिककाल से ही भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी को एक समान अधिकार दिये गये है। वेदों में इन्हें संयुक्त दम्पती कहकर सम्बोधित किया गया है, जिसका अर्थ होता है - **दम** अर्थात् घर, **पति** अर्थात् उसके स्वामी। पति-पत्नी दोनों घर में समान स्वामित्व रखने वाला कहा गया है। भारतीय संस्कृति में परिवार का प्रमुख (मुखिया) होने के कारण पति को **गृहस्वामी** या **गृहपति** कहा गया है, वहीं पत्नी को भी **गृहस्वामिनी** या **गृहिणी** जैसे विशिष्ट पदों से विभूषित किया गया है।[28] नारी को पत्नी रूप में भी पति के समान यज्ञाधिकार प्राप्त थे। ऋग्वेद में दम्पति द्वारा मिलकर यज्ञ करने का अनेक ऋचाओं में वर्णन प्राप्त होता है। एक ऋचा में कहा गया है - कि जो पति-पत्नी मिलकर, समान मनवाले होकर यज्ञ करते हैं, और ईश्वर-उपासना से अपने आत्मा को पावन करते हैं, उन्हें पुष्कल अन्न, पुत्र, धन-हिरण्यादि और यश की प्राप्ति होती है।[29] दशम मण्डल के एक मन्त्र में कहा गया है –

चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतपतीका वयुनानि वस्ते।

तस्यां सुपर्णा वृषणा निषेदुर्यत्र देवा दधिरे भागधेयम्।

अर्थात् चार चोटी वाली, सुन्दररूपवाली, स्नेहशीला युवती जिसके ऊपर वर्षा करने वाले दो सुपर्ण बैठे हुए हैं और जहाँ सब देव अपना-अपना भाग प्राप्त करते हैं। इस मन्त्र पर भाष्यकार सायण ने यज्ञपरक व्याख्या करते हुए - इस युवती को अलङ्कृत यज्ञवेदी माना है जिसके चारों कोने उसकी चार चोटियाँ हैं और उस पर बैठे हुए दो सुपर्ण

---

[26]**अष्टाध्यायी - ४/१/३३**

[27]**शतपथब्राह्मण -१/९/२/१४**

[28]**ऋग्वेद- ५/३/२ एवं १०/८५/३२**

[29]**या दम्पती समनसा सुनुत आ च धावतः। देवासो नित्यया शिरा। ऋ.-८/३१/५**

यजमान दम्पती हैं, जिनके आहुति देने से सब देवों को उनका भाग प्राप्त होता है ।[30] ऋग्वेद के ऋषिगण लोग पत्नी सहित यज्ञ में बैठते हैं और नमस्करणीय को नमस्कार करते है ।[31]

समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ ।

सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥[32]

इस मन्त्र को पुरोहित द्वारा पाणिग्रहणसंस्कार में वर-वधू दोनों के द्वारा पढ़ा जाता है ।[33] इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए सायण ने लिखा है कि यह ऋचा वर के दधिप्राशन में अथवा वर के द्वारा वधू के हृदयस्पर्श में विनियुक्त है ।[34] यजुर्वेद में कर्मकाण्ड की प्रधानता है । वहाँ भी यही कहा गया है कि विवाह के बाद ऐसा कोई पारिवारिक या धार्मिक कृत्य नहीं है जिसमें स्त्री पुरुष के साथ न रहे । यज्ञदेवता के एक मन्त्र में मधुच्छन्दा ऋषि विदुषी देवियों को सम्बोधित कर कहते हैं - कि हे विद्यायुक्त स्त्रियों ! अपने विद्वान् पतियों के साथ इस यज्ञ को सफल बनाओ ।[35] अन्यत्र भी पत्नीवान् यज्ञ की सफलता की कामना की गई है ।[36] वैदिकयाग इत्यादि विविध कृत्यों एवं धार्मिक कर्मकाण्डों में पत्नी, पति के किस ओर आसन ग्रहण करें ? इस विषय में हमारे गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र एवं स्मृतिग्रन्थों में समुचित निर्देश प्राप्त होता हैं । इससे भी यही स्पष्ट होता है कि वैदिककाल में पति-पत्नी मिलकर यज्ञों में भाग लेते थे और नारी का पत्नी के रूप में भी यज्ञाधिकार सिद्ध होता है ।

जिस प्रकार यज्ञ के संचालन के लिए पति-पत्नी का होना आवश्यक है, उसी प्रकार सृष्टि के संचालन के लिए पति-पत्नी का पास्परिक सम्बन्ध होना भी अत्यन्त ही आवश्यक है क्योंकि यही सम्बन्ध सृष्टि के संचालन का हेतु है । अथर्ववेद के विवाह सूक्त में वर, वधु को सम्बोधित करता हुआ कहता है - **द्यौरहं पृथिवीत्वम् ।**[37] मैं द्यु हूँ और तुम पृथ्वी हो। जिस प्रकार द्युलोक और पृथ्वी एक दूसरे के प्रति आकर्षित और आबद्ध रहते है, उसी प्रकार हम दोनों भी एक दूसरे के प्रति आकर्षित और आबद्ध रहें । जिस प्रकार मनुष्य दोनों पैरो से सम्यक तरह से चलने में

---

[30]**चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतपतीका वयुनानि वस्ते।**
तस्यां सुपर्णा वृषणा निषेदुर्यत्र देवा दधिरे भागधेयम्। ऋग्वेद. १०/११४/३ सायणभाष्य -
[31]**संजानाना उपसीदन् अभिनु पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन् । ऋग्वेद.१/७२/५**
[32]**ऋग्वेद. १०/८५/४७**
[33]**आश्वलायनगृह्यसूत्र (विवाह संस्कार)**
[34]**ऋग्वेद-१०/८५/४७;सायणभाष्य**
[35]**ता देवीर्देवत्रेमं यज्ञं नयत । यजुर्वेद -६/३४**
[36]**पात्नीव्रतश्च मे..... यज्ञेन कल्पन्ताम् । यजुर्वेद १०/२०**
[37]**अर्थववेद -१४/२/७१**

समर्थ होता है, उसी प्रकार गृहस्थ आश्रम के पति-पत्नी दोनों ही दो पैरों के समान है जो गृहस्थ आश्रम को सुचारू रूप से चलाने में समर्थ होते हैं। आचार्य यास्क निरुक्त में पत्नी शब्द का निर्वचन करते है - **पतनात्त्रायते इति पत्नी ।** अर्थात सामाजिक पतन से बचाने वाली पत्नी कहलाती है**,** उसी प्रकार पत्नी की रक्षा करने के कारण पति कहलाता है। किसी भी पारिवारिक, सामाजिक तथा लौकिक कृत्य में पत्नी और पति दोनों समान रूप से भाग लेते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है- **जाया इत् अस्तम् ।**[38] जाया ही घर है, वही कुलवृद्धि का आधार है। जाया अर्थ है - **जायते अस्यां पतिः इति जाया ।** पति ही पुत्र के रूप में जन्म लेता है; अतः स्त्री (पत्नी) को जाया कहते हैं। इसलिए वेदान्त का वचन है कि -**आत्मा वै जायते पुत्रः।** पिता-माता की आत्मा ही पुत्र-रूप में जन्म लेती है। महाभारत का वचन है -

अङ्गादङ्गात् संभवसि हृदयाधिंजायसे ।

आत्मा वै पुत्रनामास स जीव शरदः शतम् ॥

आत्माऽऽत्मनैव जनितः पुत्र इत्युच्यते बुधैः।

तस्माद् भार्यां नरः पश्येन्मातृवत् पुत्रमातरम् ।।[39]

जहां परिवार के सभी सदस्य को समान रखा जाता है, इसलिए घर को अस्त कहते है।[40] इसी श्रुति का अनुकरण करते हुए महाभारत में कहा गया है -

पुत्रपौत्रवधूभृत्यैराकीर्णर्मापसर्वतः।

भार्याहीनं गृहस्थस्य शून्यमेव गृहं भवेत् ॥

न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते ।

गृहं तु गृहिणीहीनमरण्यसदृशं मतम् ॥[41]

---

[38]**जायेदस्तं मघवन् त्सेदु योनिः तदित् त्वा युक्ता हरयो वहन्तु ।**
यदा कदा च सुनवाम सोमम् अग्निष्ट्वा दूतो धन्वात्यच्छ ॥ ऋग्वेद-३.५३.४
[39]**महाभारत-१/७४/६३; महाभारत १/७५/४७**
[40]**अस्यन्ते क्षिप्यन्ते पदार्था अत्र इति अस्तम् । वेदों में नारी- पृष्ट-५**
[41]**महाभारत; शान्तिपर्व-१४४/५-६,**

पुत्र, पौत्र, पतोहू तथा सेवकों से सभी प्रकार से भरे रहने पर भी गृहस्थ का घर पत्नी के विना सूना ही रहता है। भवन को गृह नहीं कहते हैं अपितु गृहिणी ही गृह कही जाती है। गृहिणी के विना घर जंगल के सदृश है। परिवार में गृह की सुरक्षा, संचालन, निरीक्षण और समुन्नयन का पूरा उत्तरदायित्त्व पत्नी पर होता है, पत्नी गृहस्थरूपी वृक्ष का मूल है। इसलिए कहा गया है - **यत्र भार्या गृहं तत्र।**[42] जिसके घरमें माता एवं प्रियवादिनी पत्नी नहीं है उन्हें अरण्य में जाने की आवश्यकता नहीं उनका घर ही अरण्य के समान है।[43] इसी प्रकार हिंदी लोकोक्ति है - **बिन घरनी घर भूत का डेरा।** इस कारण ही शतपथब्राह्मण में पत्नी को गृह (घर) की प्रतिष्ठा कही गई है - **पत्योहियेव स्त्रियै प्रतिष्ठा।**[44] महाभारत में भी पत्नी को सखा व अर्धांगिनी बताया गया है और त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम का मूल माना है -

अर्धं भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा।

भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मित्रं तरिष्यतः॥[45]

काम के माध्यम से संतान को जन्म देकर घर का भाग्योदय करनेवाली स्त्रियां सम्मान के योग्य और घर को प्रकाशित करनेवाली होती हैं; इस कारण शोभा, लक्ष्मी और स्त्री में कोई भिन्नता नहीं है। ब्राह्मणग्रन्थों में पत्नी को श्री और लक्ष्मी कहा गया है -

सविता श्रिया स्त्रियं समदधात्। - गो.ब्रा. 1, 34

श्रियै वा एतद्रूपं यत् पत्न्यः। - श.ब्रा. 13.2.6.7

श्रिया वा एतद्रूपं यत् पत्न्यः। - तै.ब्रा. 3.9.4.7

भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के प्रतियोगी नहीं अपितु एक-दूसरे के पूरक के रूप सामने आते है। सृष्टि संरचना का आधारस्तंभ स्त्री-पुरुष का पारस्परिक संबंध है; स्त्री-पुरुष का साहचर्य्य ही पूर्णता है, इसके अभाव में पुरुष अधूरा है। उदाहरणार्थ - गृहस्थ रथ का एक पहिया यदि पति है तो दूसरा पत्नी है, जिस प्रकार एक पहिये से

---

[42]**यत्र भार्या गृहं तत्र, पुरुषस्यापि नान्यथा।**
ग्रामे वाप्यथवाऽरण्ये, सर्वधर्मस्य साधनम्॥पद्मपुराण 2/59/23
[43]**माता यस्य गृहे नास्ति भार्या च प्रियवादिनी।**
अरण्यं ते न गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम्॥
[44]**शतपथब्राह्मण -२/६/२/१४; ३/३/१/१०**
[45]**महाभारत -१/६८/४०**

रथ न ठहर सकता है और ना ही गति प्रदान कर सकता है और एक पंख से चिड़िया उड़ नहीं सकती ठीक उसी प्रकार भार्या से रहित अकेला पुरुष कोई भी कार्य नहीं कर सकता। भविष्यपुराण का वचन है -

एकचक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः।

अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु ॥[46]

पुमानर्द्धपुमांस्तावद्यावद् भार्यां न विन्दति ।[47]

पुरुष तबतक पूर्णताको धारण नहीं करता, जबतक कि उसके आधे अंग को आकर नारी नहीं भर देती है, अतः स्त्री पुरुष की **अर्धांगिनी** है। पति-पत्नी सम्बन्ध अलौकिक, अद्वैत होता है इस दाम्पत्य जीवन के विषय में भवभूति उत्तररामचरित में कहते है -

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु यद्

विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः।

कालेनावरणात्ययात्परिणते यत्प्रेमसारे स्थितं

भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्राप्यते ॥[48]

दाम्पत्य जीवन सुख और दुःख में एकरूप समान है सभी अवस्थाओं में अनुसरण करता है, जिसमें हृदय को विश्राम मिलता है, जिसमें अनुराग को वृद्धावस्था भी दूर नहीं कर सकती है, जो समय से विवाह से लेकर मृत्युपर्यन्त परिपक्व एवं उत्कृष्ट प्रेम में स्थित रहता है, उस दाम्पत्य का वह एक कल्याण बड़े पुण्य से (ही) प्राप्त किया जाता है।

भारतीय समाज में पति-पत्नी दोनों को ही याज्ञिक, धार्मिक और सामाजिक कार्यों में सामान अधिकार प्रदान किये गये हैं। आपस्तम्बधर्मसूत्र के अनुसार-**जायापत्योर्न विभागो विद्यते।**[49] विवाहोपरान्त पति एवं पत्नी धार्मिक कृत्य साथ करते हैं, पुण्यफल में समान भाग पाते हैं, धन सम्पत्ति में समान भाग रखते हैं तथा पत्नी पति की

[46]**भविष्यपुराण अध्याय -७ श्लोक -३०**
[47]**भविष्यपुराण अध्याय -७**
[48]**उत्तररामचरितम् - १/३९**
[49]**पाणिग्रहणाद्धि सहत्वं कर्मसु। तथा पुण्यफलेषु। द्रव्यपरिग्रहेषु च ।**आपस्तम्बधर्मसूत्र– २/६/१३-१७

अनुपस्थिति में अवसर पड़ने पर भेंट आदि दे सकती है ।[50] एवं पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति समानता का व्यवहार करें। महाभारत के अनुशासनपर्व में कहा है-

देववत् सततं साध्वी भर्तारमनुपश्यति ।

दम्पत्योरेष वै धर्मः सहधर्मकृतः शुभः ॥[51]

अर्थात् पत्नी अगर पतिको देवताकी तरह समझती है, तो पति भी उसे उन्हीं नजरों से देखता है। दम्पति का एक ही धर्म है। मनु ने **अर्धांगिनी** की महत्ता का उल्लेख करते है -

अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रूषा रतिरूत्तमा ।

दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनश्च ह ।।[52]

अपत्य, धर्मकार्य, सेवा, उत्तम सुख (रति), पितरों का तथा अपना स्वर्ग पत्नी के अधीन है, अत: स्त्री (पत्नी) की पूजा करना स्वाभाविक है। स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध ही पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का मूल आधार है।

स्त्रीपुंसावात्मभागौ ते भिन्नमूर्तेः सिसृक्षया ।

प्रसूतिभाजः सर्गस्य तावेव पितरौ स्मृतौ ॥[53]

शिव-पार्वती का अर्धनारीश्वर स्वरूप उस गूढतम रहस्य की ओर निर्देश प्रदान कर रहा है, जिसमें स्त्री-पुरुष, प्रकृति-पुरुष, धर्म-अर्थ, काम-मोक्ष एवं भौतिक-अध्यात्म का रमणीय व अलौकिक समन्वय है, सहभागिता और समान अस्तित्व तथा समान सत्ता का ही स्पष्ट उदाहरण है, अर्द्धनारीश्वर का अलौकिक स्वरूप । यह एक प्रतीक है और प्रतीक सदैव सांकेतिक होते हैं। अर्धनारीश्वर का रूप एक विराट दर्शन को समेटे हुए है।

---

[50]**आपस्तम्बधर्मसूत्र - २/६/१४/१६-१८**

[51]**महाभारत के अनुशासनपर्व- १४६अध्याय**

[52]**मनुस्मृति -९/२८**

[53]**कुमारसम्भव -२/७**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

ऋग्वेद-संहितासायणाचार्यकृत-भाष्य सहित; (भाग-१-९) पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी; चौखम्बाविद्याभवन वाराणसी; २०१६

शतपथब्राह्मणम्; प्रो. हरिनारायणतिवारी; चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

तैत्तिरीयब्राह्मणम्; जमुनापाठक; चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

ईशादि नौ उपनिषद् शांकरभाष्यसहित गीताप्रेस गोरखपुर

बृहदारण्यकोपनिषद शांकरभाष्यसहित गीताप्रेस गोरखपुर

श्रीमद्भागवद्गीता शांकरभाष्य हिंदी-अनुवादसहित(श्रीहरिकृष्णदास गोयन्दका)गीताप्रेस गोरखपुर

आपस्तम्बधर्मसूत्र, उमेशचन्द्र पाण्डेय;चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी

मनुस्मृति, कुल्लूकभट्ट टीका सहित, हरगोविन्द शास्त्री;(हिंदी अनुवाद) चौखम्भा संस्कृत संस्थान दिल्ली,2007

महाभारत हिन्दी-अनुवादसहित (खण्ड-१-६) गीताप्रेस गोरखपुर

श्रीमद्भागवतमहापुराण (खण्ड १-२) गीताप्रेस गोरखपुर;

रामचरितमानस; गीताप्रेस गोरखपुर

वेदों में नारी;पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी; विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्; ज्ञानपुर भदोही (उ.प्र.)

वैदिक अनुशीलन;डॉ.शशिप्रभा कुमार; विद्यानिधि प्रकाशन दिल्ली; 1998

सूत्र साहित्य में वर्णित भारतीय समाज एवं संस्कृति, देवेन्द्र कुमार गुप्त; प्रतिभा प्रकाशन शक्तिनगर; दिल्ली 2010

संस्कृत वांमय में नारी चित्रण; सम्पादक- गंगासहाय शर्मा, राष्ट्रिय संस्कृत साहित्य केंद्र; जयपुर 2012